Patrika (Indore), 29th January 2022, Frontpage-02

आइआइटी इंदौर की रिसर्च

कोरोना संक्रमण और रिसेप्टर से हो रहा है साइटोकिन स्टॉर्म

फेफड़ों के साथ हार्ट, किडनी, स्किन और न्यूरो पर भी पड़ा वायरस का असर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. कोरोना के इलाज के लिए अब तक प्रभावी दवा नहीं बन सकी है। करीब दो साल बीतने के बाद भी रिसर्च जारी है। दवाइयों की खोज के बीच कोविड के दौरान और इसके बाद के प्रभावों पर आइआइटी इंदौर में भी रिसर्च की गई। इसमें दावा किया कि वायरस और मेजबान रिसेप्टर की परस्पर क्रिया से संक्रमितों में साइटोकिन स्टॉर्म हुआ, जिससे कई मरीजों की मौत हुई है।

यह रिसर्च आइआइटी इंदौर के बायो इंजीनियरिंग के ग्रुप लीडर डॉ. हेमचंद्र झा ने अपने रिसर्च स्कॉलर चारु सोनकर, इंटर्न वैष्णवी हसे, दुर्बा बनर्जी, डॉ. राजेश कुमार के साथ एनआइटी रायपुर के डॉ.अवनीश कुमार के साथ की। इसे कैनेडियन जर्नल ऑफ कैमिस्ट्री में प्रकाशित भी किया गया है। रिसर्च के अनुसार प्राथमिक तौर पर कोविड का असर सीधे फेफड़ों पर देखने को मिला हो, लेकिन संक्रमण ने फेफड़ों के साथ-साथ हार्ट, किडनी, स्किन और न्यूरो सहित अन्य अंगों पर भी असर किया है। डॉ. झा ने बताया, कोविड के इलाज में स्टेरॉइड्स के इस्तेमाल से भी संक्रमितों में कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं और दुष्प्रभाव हुए हैं। रिसर्च में उन एंटीबॉडी के बारे में जानकारी शामिल की गई है, जिनका आपातकालीन उपयोग किया गया। यह तथ्य पाया गया कि कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स कोविड के लिए महत्वपूर्ण उपचार है।